JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भागीदारी: देवांगन समाज की महिलाओं का एक विशेष अध्ययन (चांपा, जांजगीर-चांपा जिले के सन्दर्भ में)

शोधार्थी-श्री मति मंजुला देवांगन(वाणिज्य), डॉ.सी.वी.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
शोध निर्देशक- डॉ. अभिषेक पाठक(वाणिज्य एवं प्रबंध विभाग), डॉ.सी.वी.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :- हथकरघा उद्योग चांपा क्षेत्र का सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त लघु एवं कुटीर उद्योग है जो पूरे चांपा के आसपास स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में फैला हुआ है | यह एक बड़े कुशल और अकुशल कार्यबल को रोजगार देता है, और चांपा में देवांगन समाज के, मुख्य रूप से महिला श्रमिकों की हथकरघा कताई और बुनाई मुख्य व्यवसाय है | इस पेपर का उद्देश्य हथकरघा उद्योग में देवांगन समाज की महिला भागीदारी का मूल्यांकन करना है, यह अध्ययन देवांगन समाज के 70 सक्रिय सदस्यों के व्यक्तिगत साक्षात्कार कार्यक्रम के माध्यम से एकत्र किए गए प्राथमिक आंकड़ों से प्राप्त जानकारी के अनुसार बुनकरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर केंद्रित है | परिणाम बताते हैं कि बुनाई देवांगन समाज का मुख्य व्यवसाय है, क्योंकि हथकरघा उद्योग की सांद्रता उच्च है | हथकरघा उद्योग में काम करने के लिए महिलाओं की भागीदारी का प्रमुख कारण खराब आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, कम आय, कम साक्षरता और शिक्षा हैं |

आशय :-

भारत में हथकरघा उद्योग का इतिहास सदियों पुराना रहा है | हथकरघा कताई और बुनाई ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का मुख्य व्यवसाय था | दुर्भाग्य से, यह उद्योग कई कारणों से घट रहा है | यह क्षेत्र देश में कपड़ा उत्पादन का लगभग 15% हिस्सा कवर करता है, और देश की निर्यात आय का भुगतान भी करता है | कृषि के बाद हथकरघा बुनकरों और संबद्ध श्रमिकों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने वाला सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधियों में से एक है | यह जांजगीर-चांपा जिले के लाखों लोगों को रोजगार देता है | जांजगीर-चांपा जिले के मुख्यतःचांपा क्षेत्र में, हाथ की बुनाई, मुख्य बुनाई जाति देवांगनो का एक पारंपरिक व्यवसाय था, यह उद्योग मुख्य रूप से जांजगीर-चांपा, बिलासपुर, रायगढ़ जिलों में केंद्रित है | वर्तमान में, यह उद्योग उत्पादन की बढ़ती लागत, विपणन कठिनाइयों और कार्यशील पूंजी

की समस्याओं के कारण गंभीर संकट का सामना कर रहा है | हथकरघा उद्योग हमेशा मेले और प्रदर्शनियों के माध्यम से अपने उत्पादों में नवाचारों को प्रोत्साहित करता है | हथकरघा उद्योग की ताकत नवोन्मेषी डिजाइन पेश करने में निहित है, जिसे पावरलूम उद्योग द्वारा फिर से तैयार नहीं किया जा सकता है, इसलिए हथकरघा उत्पाद को अद्वितीय उत्पाद की संज्ञा दी गयी है | इस प्रकार, हथकरघा उद्योग जांजगीर-चांपा जिले की परंपरा का एक हिस्सा है, और राज्य की समृद्धि, विविधता और बुनकरों की रचनात्मकता का प्रतीक है | चूंकि अधिकांश बुनकर समाज ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित थे, इसलिए ग्रामीण लोगों की आजीविका में सुधार के साथ-साथ क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन में इसकी प्रमुख भूमिका रही है |

हथकरघा उद्योग पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा की बचत करने वाले उत्पादों का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे पर्यावरण को किसी प्रकार की क्षति नहीं हो रही है जिसके परिणामस्वरूप सतत विकास में वृद्धि हुई है | जांजगीर-चांपा जिले के हथकरघा उत्पादों को उनके आकर्षक डिजाइन, रोमांचक रंगों और नाजुक बनावट के लिए सराहा जाता है | सदियों से, अधिकांश हथकरघा उत्पाद पारिवारिक बुनकरों द्वारा बनाए गए थे और प्रत्येक की एक अनोखी कहानी थी कि उन्हें इस विशेष व्यापार से कैसे परिचित कराया गया, जांजगीर-चांपा जिले के देवांगन समाज के बुनकरों की कलात्मकता विश्व भर में प्रसिद्ध है, तथा इस जिले में 101 बुनकर सहकारी समितिया विद्यमान है इनमें स्थापित करघों की संख्या 2984 जिनमे से कार्यशील करघे 2037 है | तथा इन समितियो में लगभग 3664 बुनकर कार्यरत हैं। कार्यबल मुख्य रूप से महिला है, जो कुल कार्यबल का 91 प्रतिशत है | सूत, धागा और डाई सामग्री विभिन्न हथकरघा बुनकर सहकारी समितियों द्वारा बुनकरों को प्रदान की जाती है, बुनकर घर पर काम करते हैं और इन सोसायटियों को तैयार उत्पाद उपलब्ध कराते हैं |

महिलाओं ने राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया | हथकरघा क्षेत्र एकमात्र ऐसा विनिर्माण क्षेत्र है जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले उत्पादों का उत्पादन करने वाली महिलाओं की एक बड़ी संख्या पाई जाती है | देवांगन समाज के हथकरघा उद्योग की एक अनूठी विशेषता यह है कि यहाँ 91 प्रतिशत महिलाएं लगभग 60 प्रतिशत महिला उत्पादों का उत्पादन करती हैं | वर्तमान में, हथकरघा उद्योग में गिरावट आ रही है जिसका सीधा प्रभाव इस उद्योग की महिला बुनकरों पर पड़ा है | उनकी कार्य भागीदारी में वृद्धि हुई है और साथ ही प्रति दिन काम के घंटों में वृद्धि के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं, विशेष रूप से शारीरिक समस्याओं के बारे में | वर्तमान अध्ययन में देवांगन हथकरघा समाज के महिला बुनकरों की कार्य भागीदारी और सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है |

अध्ययन का उद्देश्य :-

- चांपा (जांजगीर-चांपा) क्षेत्र के देवांगन समाज के महिला बुनकरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना |
- महिला बुनकरों की समस्याओं की पहचान करना |
- हथकरघा बुनाई व्यवसाय में देवांगन महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करना |

अनुसन्धान क्रियाविधि :-

अध्ययन जांजगीर-चाम्पा जिले के चांपा में आयोजित किया जाता है | क्योकि यह एक प्रमुख स्थान में से एक है जो तीव्र गति से लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करता है, विशेष रूप से हथकरघा उद्योग का | इसके अलावा इकाइयों की स्थिति की निकटता, सुविधा अवलोकन और क्षेत्र सर्वेक्षण के लिए क्षेत्र चयन एक सम्मोहक कारण था | इस शोध हेतु सुविधाजनक प्रतिदर्श का उपयोग किया गया है, प्रतिदर्श के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का संकलन किया गया है | प्राथमिक समंको का संकलन के लिए बुनकर सहकारी समितियों के बुनकरों से प्रश्नावली भरवाकर आकड़े प्राप्त किया गया, तथा द्वितीयक समंको का संकलन के लिए जिला हथकरघा कार्यालय जांजगीर चाम्पा, भारतीय हथकरघा प्राद्यौगिकी संस्थान चाम्पा, छत्तीसगढ़ राज्य हथकरघा विकास एवं विपणन संघ रायपुर, जिला हथकरघा कार्यालय रायगढ़ से जानकारी एकत्र की गयी है |

साहित्य की समीक्षा :-

नाथ दुलुमोनी (2020) ने कोविड-19 महामारी के दौरान महिला बुनकरों की स्थिति का अध्ययन किया और अपने शोध पत्र में लिखा कि हैंडलूम उद्योग भारतीय संस्कृति का हिस्सा है और यह हमारे देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह कृषि की क्षमता के बाद आर्थिक गतिविधियों में अधिक से अधिक लोगों को समाहित करता है | इस पत्र में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसके अंतर्गत हैंडलूम उद्योग महिलाओं की भागीदारी तय करने में आय की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि महिला बुनकर नियोक्ता के अधीन रहकर काम नहीं करती वह घर पर रहकर ही कार्य करती है इस प्रकार बुनाई क्रियाविधि में महिलाओं की हिस्सेदारी अधिक है फिर भी लॉकडाउन के कारण इस क्षेत्र में बुनकर

भारी नुकसान उठा रहे हैं और भारी कर्ज में डूबे हुए हैं, प्रमुख समस्याओं में कच्चे माल की कमी के कारण बुनकरों को आपूर्ति सही समय पर नहीं हो पा रही है इसीलिए उत्पाद का उत्पादन तथा बिक्री लॉकडाउन के दौरान बंद हो गई है लेकिन बुनकर विशेष रूप से महिला बुनकर है, तत्काल सरकार और गैर राज्य अभिनेताओं को राहत के कुछ रूप प्रदान करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है |

कुमार विवेक, कुमारी प्रतिष्ठा, यादव पूजा और कुमार मदन (2021) ने अपने पेपर में बताया है कि हैंडलूम उद्योग के अस्तित्व को पुरातात्विक निष्कर्ष और प्राचीन ग्रन्थ प्रकट करते है इसलिए इसे भारत के सबसे प्राचीन उद्योगों में से एक कहा गया है | तथा हैंडलूम उद्योग कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा ऐसा क्षेत्र है जो बहुत से लोगो को रोजगार प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, उपर्युक्त के बावजूद भी हैंडलूम उद्योग का विकेन्द्रीकृत होना, कच्चे माल की कीमत में तेजी से उतार-चढ़ाव, बुनाई के पारम्परिक तरीके, उत्पाद की उच्च कीमत होना, अपर्याप्त कुशल श्रमिक और युवाओ की कमी, कार्यशील पूँजी की समस्या, ऋण की कमी आदि समस्याएं इस क्षेत्र में विद्यमान होने से हथकरघा उद्योग का विकास नहीं हो पा रहा है, इन समस्याओ के समाधान के लिए सरकार को समय-समय पर योजनाए बनाने और क्रियान्वित करने की आवश्यकता है |

सिंह हितैषी (2021) ने भारतीय हैंडलूम उद्योग के विश्लेषण कर अपने शोध पत्र में लिखा है कि भारतीय हैंडलूम उद्योग भारत में सबसे प्राचीन और सबसे बड़े कुटीर उद्योगों में से एक है यह उद्योग कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता क्षेत्र है तथा उद्योग को उनके अद्वितीय डिज़ाइन तथा बारीकी के लिए जाना जाता है | इस शोध पत्र के अंतर्गत इस क्षेत्र में समस्याए यह है कि बुनकरों को अधिक कार्य घंटे के बदले कम मजदूरी मिलती है जिससे बुनकर इस पेशे से बाहर निकलकर अन्य पेशे में जाना ज्यादा उचित समझते है, मुख्य समस्या इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचो और माल की बिक्री का अभाव है, अतः सुझाव यह है कि बुनकरों को कार्य घंटो के अनुसार उचित मजदूरी दी जानी चाहिए तथा सरकार को बुनियादी ढांचो को सुधारने और बिक्री में वृद्धि के लिए उचित प्रबंध करनी चाहिए |

तंजौवल, दास और मलस्वमत्लूएंजा (2022) ने अपने शोध कार्य के दौरान अध्ययन किया और पाया कि हैंडलूम उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति का एक अनूठा और अपरिहार्य हिस्सा है | इस लेखक के अनुसार यह अनुमान है कि हैंडलूम उत्पाद, पावरलूम उत्पाद की तुलना में तीन गुना अधिक पर्यावरण के अनुकूल है, और इसके साथ ही ग्रामीण गरीब देश में यह कृषि के बाद दूसरा रोजगार प्रदाता क्षेत्र है | हालांकि हथकरघा उत्पाद के विपणन में अनेक बाधाएं है, जो उद्योग के विकास को प्रभावित करते है इन बाधाओ में यार्न की आपूर्ति में स्थिरता, यार्न की गुणवत्ता में कमी, बिचौलियों का अस्तित्व, अनुसन्धान की कमी, मार्केटिंग प्लेटफार्म की कमी आदि है | उपर्युक्त बाधाओ को हल करने तथा हैंडलूम उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए एक अलग ब्रांड पहचान विकसित करने तथा साथ ही साथ मूल्य निर्धारण रणनीति बनाने की आवश्यकता है |

टी. डी. अश्वनी और भट शिवशंकर (2022) ने अपने शोध पत्र में लिखा है कि हैंडलूम उद्योग पूरे ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे व्यापक मान्यता प्राप्त कुटीर उद्योग है, यह बेरोजगार पुरुषो तथा महिलाओ को रोजगार के अवसर प्रदान करता है, मुख्यरूप से चेंदामंगलम समाज के महिलाओ ने इस क्षेत्र में कार्य कर राष्ट्र की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है | इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा तैयार किये गए तथा महिलाओ द्वारा पहिने जाने वाले अधिकाधिक उत्पाद मिलते है लेकिन

वर्तमान में यह उद्योग अवनति की ओर जा रहा है जिसने इस उद्योग की महिला बुनकरों को सीधे प्रभावित किया है क्योकि महिला बुनकरों के कार्य के घंटो में वृद्धि के परिणामस्वरुप स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न हो रही है, खासकर शारीरिक समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है उपर्युक्त समस्याओ के समाधान हेतु सुझाव दिया गया है कि सरकारी नियोक्ताओं को महिला बुनकरों की लंबित भुगतान (छूट, सब्सिडी) का पूरा भुगतान किया जाना चाहिए ताकि उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो सके तथा हैंडलूम उत्पादों के सार्थक विपणन के लिए हैंडलूम कर्मचारियों की व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए |

निष्कर्ष:-

हथकरघा उद्योग जांजगीर-चांपा जिले के प्राचीन पारंपरिक व्यवसायों में से एक है | जांजगीर-चांपा जिले के चांपा क्षेत्र के देवांगन समाज की महिलाओं द्वारा किया जाने वाले हथकरघा कार्य विश्व प्रसिद्ध है, यह देवांगन समाज की महिलाओ के लिए गर्व है | कुछ साल पहले उत्पाद की बहुत अच्छी मांग थी, हाल ही में, पॉलिएस्टर जैसे नए कपड़े सामग्री प्रकार के साथ बाजार में बाढ़ आ गई है, इससे हथकरघा उद्योग में धीरे-धीरे गिरावट आती रही है जिससे बुनकरों की आय बुरी तरह प्रभावित हो रही है, उपरोक्त अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि देवांगन समाज की महिला बुनकर आर्थिक दृष्टि से बहुत गरीब हैं, महिला बुनकरों को बुनाई से केवल विलय की आय हो रही है, परिवार के भरण-पोषण के लिए यह आय पर्याप्त नहीं है या परिवार की जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पा रही है | नतीजतन, उन्होंने एक बेहतर अवसर की तलाश शुरू कर दी है, हथकरघा उद्योग की निरंतर गिरावट ने महिला बुनकरों में स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा दिया है क्योंकि उनका काम अधिक शारीरिक है, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति भी बहुत खराब है, सरकार के पूर्ण समर्थन और सहयोग से ही यह मजदूर वर्ग इस क्षेत्र में अपना भरण-पोषण कर पाएगा | इसलिए, बुनाई उद्योग में अधिक संख्या में कामकाजी महिलाओं के लिए नीतियां, कार्यक्रम और शिक्षा नीति समय-समय पर बनाये जाने और पारित किये जाने की आवश्यकता है |

सुझाव :-

1. सरकार को ऐसे उत्पादों की मांग में सुधार करने के लिए सरकारी नियोक्ताओं को सप्ताह में कम से कम एक बार हथकरघा उत्पाद पहनने की सिफारिश करनी चाहिए।
2. महिला बुनकर समुदायो को लंबित भुगतान (सब्सिडी, छूट, आदि) का पूरा भुगतान किया जाना चाहिए ताकि उन्हें अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए प्रेरित और मदद की जा सके।
3. महिला हथकरघा कर्मचारियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण लागत प्रभावी वितरण चैनलों के माध्यम से हथकरघा उत्पादों के सार्थक विपणन के लिए आवश्यक है |

सन्दर्भ

Dulumoni Nath (2020), "Weaving Women Condition During Covid-19 Pandemic", Universe International Journal Of Interdisciplinary Research, Vol. 1, Issue 5, 186-190, ISSN (O) – 2582-6417.

Vivek Kumar, Pratishtha Kumari, Pooja Yadav & Madan Kumar (2021), "Ancient To Contemporary - Tha Saga Of Indian Handloom Sector", Indian Journal Of Fibre & Textile Research, Vol. 46, 411-431.

DR. Hitaishi Singh (2021), "Handloom Industry Of India", Vol-7, Issue-6, 1326-1330, IJARIIE-ISSN(O)-2395-4396.

John Thanzauval, Dr. Bindu Kati Das & Dr. V. Malsawmtluanga (2022), "Marketing For The Sustenance Of Handloom In India : A Study", Zeichen Journal, Volume 8, Issue 01, 194-203, ISSN No: 0932-4747.

Aswani T D & Dr. Shivashankar Bhat (2022), "Women's Participation in Handloom Industry : A case study of Chendamangalam, Ernakulam", International Journal of Innovative Science and Research Technology, Volume 7, Issue 3, 1193-1196, ISSN No:-2456-2165.

जांजगीर-चांपा जिले के चांपा क्षेत्र के देवांगन समाज की हथकरघा महिला बुनकरो की स्थिति का चित्र